शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

हिन्दी लघुकथाओं में स्त्री विमर्श एवं माँ का स्वरूप

विजया त्रिवेदी (शोधार्थी)
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

लघुकथा हिन्दी साहित्य की उन विद्याओं में से एक है, जिन्होने आधुनिक काल में अपनी विषिष्ट पहचान बनायी है। शायद ही कोई पत्र - पत्रिका हो जिसमें लघुकथा ने अपनी जगह न बनाई हो। लघुकथा आज की लोकप्रिय विधा है। लघुकथा गद्य साहित्य की वह लघु आकारीय विद्या है, जो अपने कथ्य एवं कथोपकथन द्वारा किसी क्षण, घटना परिस्थिति अथवा विचारों को प्रभावपूर्ण ढंग से पाठक के समक्ष प्रस्तुत करती है। लघुकथा का अतीत उतना पुराना है, जितना साहित्य का। लघुकथा का संवाद देखने में छोटे लगे घाव करे गंभीर वाली कहावत चरितार्थ करता है। आज के व्यस्त जीवन में पाठक के पास समयाभाव रहता है इसलिए लघुकथा में घनीभूत संवेदनाओं को कम शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता होती है।

प्रस्तावना

लघुकथाओं में नारी को अलग-अलग कोणों से देखा, परखा और विश्लेषित किया गया है। नारी-विमर्श की लघुकथाओं पर विचार करने से पूर्व स्त्री मानसिकता तथा पुरूषवादी को समझना आवश्यक है। तभी हम स्त्री के विभिन्न पक्षो पर निष्पक्ष रूप से विचार कर पाएंगे।

स्त्री प्रकृति की अनुपम कृति है। अतुलनीय व बहुरूपा है। उसका व्यक्तित्व बहुआयामी है। उपन्यासकार राजा राऊ ने अपने उपन्यास सांप और रस्सी में लिखा है - स्त्री भूमि है, वायु है, ध्वनि है, मन की सूक्ष्म परत है। अग्नि है, गीत है, संगीत है, भाव है।

स्त्री जितनी सुंदर और कोमल है, उतनी ही जटिल भी, बुध्दि, प्रतिभा और समझ की दृष्टि से वह पुरूष से कमतर नही है, किंतु शरीर - रचना और मानसिक बुनावट की दृष्टि से स्त्री - पुरूष में जो नैसर्गिक अंतर है, उससे इनकार कर पाना मुष्किल है। पुरूष की तुलना में औरत अधिक सहिष्णु, नमनीय, निष्ठावान, त्यागमयी, और समर्पित है। वह पुरूष की बजाय ज्यादा सहनशील है। स्त्री की निष्ठा और सहन-शक्ति के इसी इसी गुण के कारण संस्कृति पर चौतरफा हमलों के बावजूद भी हमारे समाज में भारतीयता मौजूद है। हिन्दी के एक प्रगतिशील कवि के अनुसार यदि प्रेम करने वाली और घर चलाने वाली स्त्रियाँ नही होती तो यह दुनिया एक मरूस्थल के अतिरिक्त क्या होती ? स्त्री अपने इन गुणों की बनावटी प्रशंसा के जाल में फँसकर प्रायः शोषित, प्रताड़ित और इस्तेमाल होती रही है। पुरूष द्वारा आदर्श नारी का नारा एक तरह का छल है।

लघु कथाओं में स्त्री विमर्श

स्त्री का श्रम और शरीर दोनों से शोषण होता है। स्त्री को धारा के विरूध्द संघर्ष करना होता है। दिन भर खटकती औरत को शाम को भी चैन

नही। सतीशराज पुष्करणा की कथा विश्वास में इस तथ्य की और संकेत करने के साथ-साथ प्रेम और विश्वास की डोर भी अंडर करंट की तरह प्रवाहित होती है। प्रेम और स्मृति की ऐसी ही अंतर्धरा स्व. रमेश बत्तरा लघुकथा लड़ाई में भी देखी जा सकती है। सतीश वर्मा की लघुकथा कुंडी भी पुरूष की वासना-वृति को उजागर करती लघुकथा है। श्यामसुंदर अग्रवाल की रचना अपने-अपने दर्द भी पुरूष की भोगवादी वृत्ति पर प्रहार करती है। अग्रवाल जी की ही एक और अन्य कथा एक उज्ज्वल लड़की बताती है कि प्यार में तन से अधिक महत्वपूर्ण है मन। मन स्वच्छ, पवित्र और निष्ठावान है तो स्त्री का अस्तित्व मजबूत है। देह शोषण के खिलाफ खड़ी होने वाली पिछडे वर्ग की निर्धन लड़की के विद्रोह और साहस को स्वर देती सशक्त लघुकथा है चित्रा मुदगल की नाम। पति को परमेश्वर मान अन्याय सहती स्त्री के मानस पर व्यंग्य करती एक प्रभावी लघुकथा है परमेश्वर। स्त्री का उत्पीड़न कई स्तरों पर होता है। स्त्री को संदेह की दृष्टि से देखने वाला पुरूष उसे प्रायः चरित्रहीन मानता है। जबकि लघुकथा स्त्री-पुरुष की नायिका जिस रिक्शे वाले से बात कर रही थी, वह उसका बाप था। बेटे की चाह को व्यक्त करने वाली लघुकथाओं की तादाद भी कम नही है। लड़की के पैदा होने पर पति तो पत्नी को कोसता ही है, सास, जो स्वयं एक स्त्री है, वह भी औरत जात को पैदा करने के लिए बहू को ताने मारती है। पढ़े-लिखे लोग भी पुत्र की कामना करते पाए जाते है। सास (धर्मपाल अकेला) इश्वर का न्याय का और चौखट (ओम शर्मा) लघुकथाएँ पुत्री - जन्म को हेय दृष्टि से देखने वालों पर कटाक्ष करती है। लड़कियों को हेय दृष्टि से देखने वाले गुप्तजी की अंधविश्वास सोच पर करारा व्यंग्य है। खुश-खबर में जिसने पंडित जी की सलाह अनुसार सात गरीब कन्याओं को भोजन कराने के परिणामस्वरूप ही उनके मानसिकता भी ऐसे ही संकीर्ण सोच की ओर इंगित करती लघुकथाएं हैं।

आज भी लड़का-लड़की के बीच भेद किया जाता है। बेटी की तुलना में बेटे को वरीयत दी जाती है। लड़का-लडकी (नरेन्द्र कौर छाबड़ा) लडकी (श्यामसुंदर दीप्ति) में एक बहुत ही महीन बात की ओर संकेत किया जाता है। यदि पहले बेटी के जन्म की कामना की भी गई है। तो महज इसलिए कि बाद में होने वाले बेटे को रखने - संभालने के लिए कोई तो चाहिए। इस दृष्टि से भी लड़की का इस्तेमाल करने से लोग नहीं चूकते। कई बार स्त्री स्वयं नही जानती कि वह क्या कर रही है। जाने-अनजाने वह स्वयं को कमजोर मान लेती है। लड़का-लड़की (सूर्यकांतनागर) में सात वर्षीय सोनू भीड़ भरी सड़क पर तेजी से जा रही माँ की साड़ी का पल्लू बार-बार पकड़ रहा है, सुरक्षा की दृष्टि से माँ जल्दी में है, माँ चिल्ला पड़ी - लड़कियों की तरह बार-बार पल्लू थाम रहा है। जब महिलायें अकसर, मंत्री या नेता का घेराव कर उसे चूड़ी भेंट करने की बात करती है, तब भी प्रकारांतर वे स्वंय को कमजोर और लाचार सिध्द करना चाहती हैं। चूड़ियों को वे कमजोरी का प्रतीक मानती हैं।

दहेज का दानव मुँह बाए खड़ा है। बहुओं की आहुतियाँ दी जा रही हैं। अनिन्दिता की अभिमान और श्यामसुंदर अग्रवाल की खरीदी हुई मौत दहेज की कुप्रथा पर प्रहार करती विचारपरक लघुकथाएँ है। अभिमान में तो उन कथित समाज

सेविकाओं को भी खिल्ली उड़ाई गई है, जो दहेज के विरूध्द आवाज उठाने का नाटक करती हैं।

कई बार औरत ही औरत की दुश्मन होती है। असंवेदनशीलता की हद तो तब पार होती है, जब शोक व्यक्त करने आई औरतों में से एक लड़की की सास को ढाँढस बँधाते हुए कहती है - हौसला रख, सुरेश की माँ। भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि तेरा सुरेश एक्सीडेंट में बच गया। बहुएँ तो बहुत मिल जाएँगी, पर बेटा और कहाँ से लाती तू। यह स्वर है धर्मपाल साहिल की लघुकथा औरत से औरत तक का। अरूणा शास्त्री की और डॉ.तारा परमार की लघुकथा माँ मैं गुड़िया नही लूँगी में यदि एक और गुड़िया के माध्यय से स्त्री की असहायता का उल्लेख है तो दूसरी और प्रतिरोध का स्वर है।

पुरूष सत्तात्मक समाज में औरत को सदैव दोयम दर्जे का माना गया है। मनु ने तो यहाँ तक कहा था कि स्त्री को स्वाधीन नही रहना चाहिए। उसे नियंत्रण में रखा जाना चाहिए क्योंकि उसकी कामना को संतुष्ट किया ही नहीं जा सकता। हीबोल और नीत्से के अनुसार स्त्री एक अनैतिहासिक और अविकसित इकाई है। जबकि बुराई की जड़ तो पुरूष है। वह औरत को कुर्सी - मेज की तरह इस्तेमाल करता है। यदि स्त्री को पुरूष - शोषण से बचना है तो उसे शिक्षित, विवेकशील, आत्म-विश्वासी और आत्मनिर्भर बनना होगा। नारी मुक्ति और मुक्त नारी में अंतर किया जाना चाहिए। लघुकथाएँ परस्पर समझ विकसित कर नारी - चेतना जागृत करने का महत्वपूर्ण काम कर सकती हैं, कर रही हैं और उम्मीद है भविष्य में और तीव्रता से करती रहेंगी।

नारी-सुलभ जिन विशेषताओं का यहाँ उल्लेख हुआ है, उन्हीं के तहत स्त्री ममतामयी माँ है। माँ को लेकर अनेक मार्मिक लघुकथाएं लिखी गई हैं। इनमें माँ के उदात्त और उदार रूपों को चित्रित किया गया है। हर धर्म में माँ एक सी होती है और हर माँ का बस एक ही धर्म होता है। माँ, ममता, ममत्व, शीर्षकों से लिखी गई कथाएँ इसका प्रमाण है। यहाँ तक कि भूख से बिलखते अपने बच्चे की प्राण-रक्षा के लिए स्त्री अपना शरीर तक बेचने को तैयार हो जाती है। (सौदा-नियाज) हर माँ की संवेदना एक सी होती है यह स्पष्ट होता है रामनिवास मानव की लघुकथा माँ से, अपने साथ कैसा भी दुर्व्यवहार हो, माँ कभी बेटे का अहित नही चाहती (ममता - कृष्णानंद कृष्ण) अलग कमरे में रहकर खाना पका रही माँ जब आपातकाल में सबके लिए खाना तैयार करती है तो उसका तर्क होता है कि एक बार मैं बहू को तो भूखा रख सकती हूँ पर उसके पेट में पल रहे बच्चे को भूखा कैसे रख सकती हूँ (माँ - सूर्यकांतनागर)। एक स्त्री ही जान सकती है कि माँ के आँचल में जो सुरक्षा और शीतलता है, वह बड़े से बड़े कवच या कंडीशनर में नहीं है। माँ का आँचल कितना ही मैला हो, श्रम से सना हो, संतान को उसमें ममत्व की महक महसूस हो ही जाती है। मातृत्व कथा में माँ बेटे को डाँटती है कि वह स्कूल में अपने टिफिन का आधा खाना दोस्त को क्यों खिला देता है। बेटा बताता है कि दोस्त की माँ नही है और उसे नौकर के हाथ का भोजन तनिक भी अच्छा नहीं लगता। बस इसलिए ....। सुनकर माँ को लगता है, वह माँ तो काफी पहले बन चुकी थी, पर मातृत्व का असली मतलब उसकी समझ में अब आया है। लेकिन अपवाद कहाँ नही होते। बोतल में बंद ममता

(कोमल) में आधुनिक माँ न केवल बच्चों को आया के भरोसे छोड़ देती है, बल्कि अपना दूध भी पिलाना पसंद नही करती, क्योंकि उसके शरीर की बनावट के बिगड़ने की आशंका रहती है।

निष्कर्ष

माँ के ममत्व का जो सर्वग्राही स्वरूप है वह हमें इन लघुकथाओं में देखने को मिलता है। माँ व्यापक, स्नेह और संरक्षण का विराट रूप है, उससे इनकार नही किया जा सकता। रामकुमार तिवारी जी की कविता - घोसले में आई चिड़िया से पूछा चूजों ने, माँ आकाश कितना बड़ा है, चूजों को पंखो के नीचे समेटती, बोली चिड़िया, सो जाओ उन पंखों से छोटा है।

संदर्भ ग्रंथ

1 लघुकथा में स्त्री विमर्श, सूर्यकान्त नागर
2 इन्टरनेट